بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA
Ph:+91-1872-220186, Fax:+91-1872-224186, Mob.98150-16879, E-Mail:ansarullah@qadian.in
.Mob:9682536974, Khulasa khutba of 14.11 .25

तबूक नामक युद्ध के परिवेश में नबी करीम ﷺ के जीवन चरित्र का ब्यान।

सारांश ख़ुत्बः जुमः

सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआलबिनस्रिहिल अज़ीज़ि, यू.के., स्थान मस्जिद मुबारक,बयान फर्मूदः (नबुव्वत की तिथि 14 ,1404 हश) 14.11. 2025

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطن الرجیم ۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

तशह्हुद ,तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की आयत संख्या 362 की अनुवाद सहित तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- आंहज़रत ﷺ के युद्ध एवं युद्धों में आप स. की सीरत के संदर्भ में पिछले खुत्बों से वर्णन चला आ रहा है, इसके अंतर्गत तबूक के युद्ध का विवरण बयान हो रहा था इसके आगे का वर्णन इस प्रकार है कि इस अवसर पर एक महिला ने बड़ी श्रद्धा एवं निष्ठा की भावना प्रकट की, जिसका वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि चूंकि सेना को शाम देश की ओर जाना था तथा मौता नामक युद्ध का दृश्य मुसलमानों की आँखों के सामने था, इस लिए हर मुसलमान के दिल में रसूलुल्लाह ﷺ के प्राणों की रक्षा में सावधानी का विचार सबसे प्राथमिक था। महिलाएं तक भी इस आशंका को अनुभव कर रही थीं और अपने पतियों एवं बेटों को युद्ध पर जाने के लिए आग्रह कर रही थीं।

इस निष्ठां एवं जोश का अनुमान इस प्रकार हो सकता है कि एक सहाबी रज़ी. जो

किसी काम के लिए बहार गए हुए थे, उस समय वापस लौटे जब रसूलुल्लाह ﷺ सेना को साथ लेकर मदीने से रवाना हो चुके थे। लम्बी अवधि की जुदाई के बाद जब वे इस विचार से अपने घर में दाख़िल हुए कि अपनी पत्नी को जाकर देखेंगे और ख़ुश होंगे, तो उन्होंने अपनी पत्नी को आँगन में बैठे हुए देखा और प्रेम प्रकट करने के लिए आगे बढ़े। जब वे अपनी पत्नी के निकट गए तो उनकी पत्नी ने दोनों हाथों से उनको धक्का दे दिया और पीछे हटा दिया और कहा कि क्या तुम्हें लाज नहीं आती कि ख़ुदा का रसूल स. उस ख़तरे की जगह पर जा रहा है, और तुम अपनी पत्नी से प्यार करने का साहस करते हो। पहले जाओ और अपने कर्तव्वय का पालन करो, उसके बाद ये बातें देखी जाएँगी। वो सहाबी तुरंत घर से बाहर निकल गए और अपनी सवारी की काठी को कसा और रसूलुल्लाह ﷺ को तीन मंजिल पर जाकर मिल गए, और फिर उसी समय घर वापस आए जब रसूले करीम ﷺ अपने दूसरे सहाबियों के साथ मदीने लौटे। अर्थात ये वे लोग थे जिन्होंने हर ख़तरे के समय अपने प्राणों को निशचिंत होकर ख़तरे में डाल दिया, कोई कष्ट एवं दुविधा उन्हें नहीं पहुंचा, जिसे उन्होंने कष्ट एवं दुःख समझा हो बल्कि जब भी कोई सेवा का अवसर मिलता वे अपनी जान प्रसन्नता पूर्वक पेश कर देते।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि इसके विवरण में यह लिखा है कि पन्द्रह अथवा उन्नीस स्थानों पर पड़ाव करते हुए आप स. अपने सहाबियों सहित तबूक नामक स्थान पर पहुंच गए। तबूक की इस यात्रा में जिन स्थानों पर पड़ाव किया गया उसका अलग से विवरण नहीं मिलता, परन्तु बाद में उन स्थानों पर मस्जिदों का निर्माण कर दिया गया और इन स्थानों के नाम पर ही इन मस्जिदों के नाम रखे गए, तो इतिहासकारों ने इससे यह परिणाम निकला कि इन्हीं स्थानों पर हुज़ूर ﷺ ने विश्राम किया होगा।

एक रिवायत में है कि हज़रत उतबा बिन आमिर रज़ी. बयान करते हैं कि हम तबूक नामक युद्ध में रसूलुल्लाह ﷺ के साथ निकले तो आप स. एक रात सो गए और उस समय जागे जब सूरज एक भाले जितना ऊंचा उठ चूका था। आप स. ने फ़रमाया कि ऐ बिलाल! क्या मैंने नहीं कहा था कि हमारे लिए फज्र की नमाज़ के लिए व्यवस्था करना? हज़रत बिलाल ने निवेदन किया कि या रसूलुल्लाह स! आप स. की भांति नींद मुझे भी ले गई। रावी बयान करते हैं कि रसूले करीम ﷺ ने सेना को रवाना होने का आदेश दिया और फिर कुछ दूरी तय करने के बाद सवारी से उतर कर सुन्नतें अदा कीं और सहाबा रज़ी. को नमाज़ पढ़ाई, फिर आप स. सारा दिन और सारी रात यात्रा करते रहे, यहाँ तक कि अगले दिन सुबह के समय आप स. तबूक पहुँच गए।

तबूक पहुँच कर आप स. ने अल्लाह तआला की वंदना की और सहाबा रज़ी. से सम्बोधन फ़रमाया और ठोस नसीहतें फ़रमाते हुए दुआ की, ऐ अल्लाह! मुझे एवं मेरी उम्मत

को क्षमा कर दे। ऐ अल्लाह! मुझे एवं मेरी उम्मत को क्षमा कर दे। ऐ अल्लाह! मुझे एवं मेरी उम्मत को क्षमा कर दे। आप स. ने यह दुआ तीन बार दोहराई और फिर फ़रमाया कि मैं अल्लाह से अपने और तुम्हारे लिए मग़फ़िरत मांगता हूँ। इस अवसर पर हिरक्ल को इस्लाम की दावत के लिए पत्र लिखने का वर्णन भी मिलता है। अतः हिरक्ल को पत्र दिया गया तो उसने उसे पढ़ा और कहा कि तुम अपने नबी के पास चले जाओ और उसे बता दो कि मैं उसका अनुयायी हूँ किन्तु मैं अपने राज्य को नहीं छोड़ना चाहता। उसने कुछ दीनार भी आप स. की सेवा में भेंट के रूप में भेजे। आप स. को उसके विषय में बताया गया तो आप स. ने फ़रमाया- यह उसने झूट बोला है, और आप स. ने वे दीनार लोगों को दे दिए।

इतिहास में ईला वालों का वर्णन मिलता है। तबूक में पड़ाव के समय ईला का सरदार तथा उसके साथ शाम, यमन, बहर, जरबा तथा अज़रुह नामक स्थानों के लोग भी आए और उन्होंने भी सन्धि करने की प्रार्थना की। रसूलुल्लाह ﷺ ने उनके लिए एक शरण पत्र लिखवाया, फिर मक़ना के यहूदियों से सन्धि हुई और रसूलुल्लाह स. ने उन्हें भी शरण पत्र लिख कर दिया।

तबूक नामक युद्ध के संदर्भ में ही एक सरिय्या हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी. जो उकेदर बिन अब्दुल मुत्तलिब की ओर जाने का वर्णन मिलता है। तबूक से चार सौ किमी. की दूरी पर यह एक क़िला था। उक़ीदर बनू किन्दा नामक क़बीले में से था और उसका शासक ईसाई था। रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत ख़ालिद रज़ी. से फ़रमाया कि तुम उसे रात के समय देखोगे, जब वह गाए का शिकार कर रहा होगा तो तुम उसे पकड़ लेना। फिर फ़रमाया कि अल्लाह तआला तुम्हारे लिए दूमः को पराजित करा देगा। यदि तुम उस पर ग़ल्बः पा लो, तो उसकी हत्या मत करना, उसे मेरे पास ले आना। यदि वह इंकार करे, लड़ाई करे, तो फिर उसको मार देना। अतः ऐसा ही हुआ।

तबूक के अवसर पर एक सहाबी हज़रत अब्दुल्लाह ज़ुलबजादेन मुज़नी रज़ी. के निधन एवं दफ़नाने का भी वर्णन मिलता है, जिसको देख कर कुछ बड़े सहाबियों ने भी इच्छा जताई कि काश! इस दफ़न होने वाले की जगह वे ख़ुद होते। इसी प्रकार इस यात्रा में हज़रत मुआविया बिन मुआविया मुज़नी रज़ी. के जनाज़े का भी वर्णन मिलता है। हज़रत अनस बिन मालिक रज़ी. बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ तबूक में थे कि जिब्रइल अलै. आए और कहने लगे कि या रसूलुल्लाह स! मुआविया मुज़नी मदीने में मृत्यु को प्राप्त हो गए हैं, उनकी जनाज़े की नमाज़ पढ़ें। फिर कश्फ़ में देखा कि उनकी चारपाई, जिसपर उनका शव रखा था, हवा में ऊपर उठ गई और हुज़ूर स. की आँखों के सामने आ गई। आप स. ने जनाज़े की नमाज़ अदा की। आप स. के सामने फ़रिशतों की पंक्तियाँ भी थीं। हुज़ूर ﷺ ने हज़रत जिब्रईल अलै.

से पूछा कि यह स्तर उसे कैसे प्राप्त हुआ। जिब्रईल अलै. ने उत्तर दिया कि सूरः क़ुल हुवल्लाहु अहद से प्रेम के कारण, वे उठते बैठते, सवार और पैदल, हर अवस्था में इसकी तिलावत करते थे। यह भी वर्णन मिलता है कि तबूक में पहुँचने के बाद और आगे बढ़ने के लिए सहाबा रज़ी. से आप स. ने विचार विमर्श किया। हज़रत उमर रज़ी. ने निवेदन पूर्वक कहा कि या रूलुल्लाह स! रोम देश के पास महान सेनाएं हैं, उनमें इस्लाम में से कोई भी नहीं, हम उनके निकट आ गए हैं और आप स. के निकट आने ने ही उनको भयभीत कर दिया है, हम इस साल वापस चले जाते हैं यहाँ तक की किसी एक बात पर सहमति हो जाए अथवा अल्लाह तआला कोई अन्य मार्ग दर्शन फ़रमा दे। अतएव इस बात को सुनकर रसूलुल्लाह ﷺ ने तबूक में बीस दिन ठहरने के बाद जाने का निश्चय किया, तथा एक अन्य कथन के अनुसार आप स. ने बीस दिन से कम दिनों तक तबूक में पड़ाव किया। मदीने से रवानगी एवं वापसी तक दो महीने या उससे अधिक अवधि लगी।

फ़रमाया- वापस मदीने तक आने की यात्रा के विषय में स्पष्ट विवरण इन्शाल्लाह आगे बयान होगा।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- पहले भी बंगला देश के बारे में दुआ के लिए कहा था। वहाँ जो अह्मदिय्यत का विरोधी वर्ग है, वह काफ़ी शोर मचा रहा है, अल्लाह तआला हर अहमदी को सुरक्षित रखे, अब अत्यधिक दुआओं की आवश्यकता है। इसी प्रकार मध्य पूर्व के लिए भी दुआ करें, समझोतों एवं युद्ध विराम के बावजूद उनका उसी प्रकार रक्तपात हो रहा है, अल्लाह तआला रहम फ़रमाए। इसी प्रकार अफ़्रीक़ा के आतंकवादी विभिन्न स्थानों पर हमले कर रहे हैं, कई बार अहमदी भी प्रभावित हो जाते हैं, इससे। अल्लाह तआला पूरे विश्व में शान्ति एवं सलामती स्थापित करे, आमीन।

अन्त में हुज़ूरे अनवर ने मुहम्मद हुसैन साहब सुपुत्र जनाब मुहम्मद इसमाईल साहब आफ़रबवा का सदवर्णन फ़रमाया और जनाज़े की नमाज़ ग़ायब पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई और मरहूम की मग़फ़िरत एवं दर्जात की बुलंदी के लिए दुआ की।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम, सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है सम्पर्क अनुवादक- 9781831652

18001032131–टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, पंजाब